मैग्ना द्वारा प्रकाशित

अक्टूबर 2005 • रु. 25

हेल्थ और न्यूट्रीशन

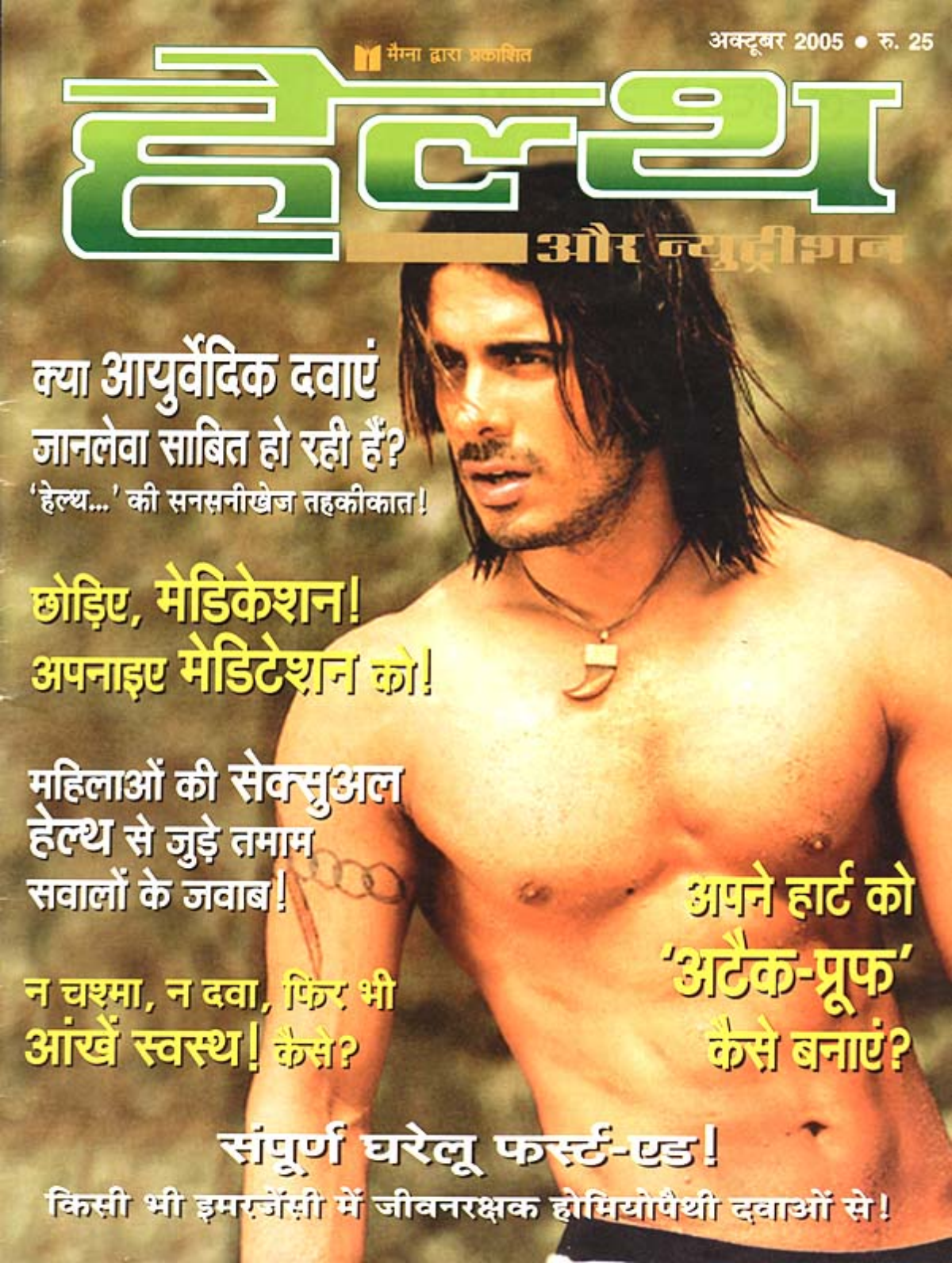

क्या आयुर्वेदिक दवाएं जानलेवा साबित हो रही हैं?

'हेल्थ...' की सनसनीखेज तहकीकात!

छोड़िए, मेडिकेशन! अपनाइए मेडिटेशन को!

महिलाओं की सेक्सुअल हेल्थ से जुड़े तमाम सवालों के जवाब!

न चश्मा, न दवा, फिर भी आंखें स्वस्थ! कैसे?

अपने हार्ट को 'अटैक-प्रूफ' कैसे बनाएं?

संपूर्ण घरेलू फर्स्ट-एड!

किसी भी इमरजेंसी में जीवनरक्षक होमियोपैथी दवाओं से!

ज्योतिष और स्वास्थ्य!

क्या आस्तिक, क्या नास्तिक, हर किसी को अपना भविष्य जानने की इच्छा होती है। पर अच्छा एस्ट्रोलॉजर मिले तब न! सच यही है कि एक अच्छा एस्ट्रोलॉजर आपकी पूरी जिंदगी का खाका आपके सामने रख देता है। यदि स्वास्थ्य की बात करें, तो जन्मकुंडली यह तक बता देती है कि किस तरह की इलाज पद्धति को अपनाने से स्वास्थ्य-लाभ हो सकता है। यह दावा है ज्योतिष विज्ञान का भी गहन अध्ययन करने वाले नैचरोपैथ *डॉ. पीयूष सक्सेना* का। इस लेख में डॉ. सक्सेना इस बात को तो साबित करेंगे ही, यह भी सिद्ध करेंगे कि ज्योतिष एक आदि विज्ञान है और आपकी हर समस्या का वर्तमान में भी उतना ही सटीक रिजल्ट देता है, जितना हजारों साल पहले देता था।

अपनी जन्म-कुंडली से जानें, किस पैथी से ठीक होगी बीमारी!

ज्योतिष शास्त्र एक रहस्यपूर्ण गूढ़ विज्ञान है, जिसकी उत्पत्ति भारतीय वेदों के समय से मानी गयी है। इसका आधार खगोल विज्ञान (Astronomy) है और इसमें सौरमंडल के ग्रहों का अध्ययन किया जाता है। ज्योतिष शास्त्र पृथ्वी के पार सौरमण्डल की चाल के माध्यम से धरातल पर होने वाली घटनाओं की व्याख्या करता है। ज्योतिष (ज्योति + ईश) का भावार्थ है 'ग्रहों के सन्देश', जो व्यक्ति में ईश्वरीय गुण व्याप्त कर दें। ज्योतिष के प्रमुख सिद्धान्तों का पालन करते हुए खगोल शास्त्र की गणनाओं के द्वारा भूतकाल और वर्तमान काल की स्थितियों का विश्लेषण करने के साथ-साथ सटीक भविष्यवाणी की जाती है।

संपूर्ण ब्रह्मांड मुख्य रूप से एक पूर्व निर्धारित योजना के अनुसार चलता है। कोई भी घटना संयोग नहीं होती। सामान्य रूप से हर घटना का कोई न कोई कारण होता है और कोई न कोई प्रभाव। ज्योतिष शास्त्र उस कारण की व्याख्या करता है। ज्योतिष को कोई कला कहता है, कोई विज्ञान, कोई आस्था तो कोई अंधविश्वास। जिन लोगों को अपने जीवनकाल में असफलताएं नहीं मिलीं और निराशा हाथ नहीं लगी, वे यह कहने में गर्व महसूस करते हैं कि उन्हें ज्योतिष में विश्वास नहीं है। इतना ही नहीं, वे ज्योतिष और ज्योतिषी दोनों का मजाक भी उड़ाते हैं। शायद उन्हें यह डर होता है कि उनका अपना महत्व कम हो जाएगा, यदि वे ज्योतिष को मान्यता दे देंगे। इस प्रकार के लोगों को ज्योतिष के सिद्धान्तों की जानकारी नहीं होती। ऐसे लोगों की जन्म कुण्डली में मंगल और यूरेनस या मंगल और बुध ग्रह के बीच में विपरीत दृष्टि (aspect) होती है। ये भी हो सकता है कि ऐसे लोगों की जन्म कुण्डली में ऐसी ग्रह दृष्टि हो कि किसी अनचाही घटना के बाद वे इस विद्या में विश्वास करने लगें।

निजी अनुभव :

मेरे साथ भी ऐसा ही हुआ। 26 वर्ष की उम्र (दिसम्बर, 1984) तक मैं ज्योतिष को नहीं मानता था। यही सोचता था कि सब कुछ 'अपना हाथ जगन्नाथ' वाली बात है। जो होता है, अपनी मेहनत से ही होता है। किसी काम का मनचाहा फल न मिलने पर, इसका दोष मैं अपनी मेहनत में कमी को दिया करता था। उन दिनों मैं बैंक ऑफ इंडिया में नौकरी करता था। एक दिन मुझे ऑफीशियल फरमान मिला कि मेरा तबादला मुरादाबाद (उ. प्र.) से शाहजहांपुर (उ. प्र.) कर दिया गया है। कुछ छोटी-मोटी घटनाएं और भी घटीं, जिन्होंने मेरा सिरदर्द बढ़ा दिया। मेरा एक पुराना सहपाठी अभय, उन दिनों मुरादाबाद आया हुआ था। उसे ज्योतिष विज्ञान का अच्छा ज्ञान था। मैंने सोचा कि क्यों न उसके ज्योतिष ज्ञान को आजमाया जाए और मैंने उससे निम्न प्रश्न पूछे :

(1) मुझे शाहजहांपुर ही जाना होगा या फिर वहां के बजाय बरेली जाऊंगा?
(2) मुझे वहां सेटल होने में कोई परेशानी तो नहीं आएगी?
(3) मैं वहां कितने दिन रहूंगा? अगला तबादला कब और कहां होगा? इसके अलावा भी चन्द प्रश्न किए गए।

अभय ने एक दिन का समय मांगा और अगले दिन सभी सवालों का खुलासा कर दिया। बात आई गई हो गई। समय बीतता गया। एक के बाद एक करके घटनाएं सच होने लगीं, लेकिन तब भी मैंने ज्योतिष को गंभीरता से नहीं लिया। लेकिन जब नवम्बर, 1986 में मुझे गाजियाबाद तबादले का आदेश मिला, तो मैं चकित रह गया। क्योंकि अभय ने दो वर्ष पूर्व ही मुझे इसके बारे में बता दिया था। बस, अन्तर इतना था कि समय सितम्बर '86 से नवम्बर '86 हो गया था और जगह हो गई थी दिल्ली से गाजियाबाद। मारे आश्चर्य के, मेरे दिल में बार-बार यही सवाल उठ रहा था कि ज्योतिष की किताबों से ट्रांसफर का पता कैसे चलता है?

दो-तीन माह के बाद जब मेरी अभय से मुलाकात हुई, तो उसने मेरी सभी शंकाओं का समाधान कर दिया। उसने बताया कि ज्योतिष से यह पता चल जाता है कि कार्यालय में बैठने का स्थान बदल रहा है, तो कब और किस दिशा में; स्थान बदलने की दूरी कितनी है? वह कोई छोटा-मोटा नगर है या तड़क-भड़क वाला महानगर? दूरी में रात का सफर है या नहीं? बीच में समुद्र पड़ता है (विदेश यात्रा) या नहीं? कई बड़ी-बड़ी नदियां पार करने की जरूरत तो नहीं पड़ती? नया शहर पानी से घिरा (जैसे-बम्बई, मद्रास, कोलकाता) है या नहीं? यही नहीं, ज्योतिष से यह भी पता चल जाता है कि घर में रसोई का स्थान बदल रहा है, या नहीं; यदि हां तो कब और किस दिशा में। ध्यान दें, कभी-कभी ट्रांसफर में रोज-रोज अप-डाउन

करने की स्थिति आती है, जब पास के स्थान पर ट्रांसफर होता है और ऑफिस बदलता है, परन्तु घर नहीं। ज्योतिषीय गणना से जब इतना पता चल जाता है, तो ज्योतिषी अपने बुद्धि-विवेक से सटीक भविष्यवाणी कर सकता है।

इस प्रकार दिसम्बर 1986 में हुई ज्योतिष में मेरे विश्वास की शुरूआत, जो समय के साथ बढ़ती चली गयी। 1990 में मेरा ट्रान्सफर लखनऊ हो गया। तब श्री अभय राज सिंह सोमवंशी से मेरा मिलना-जुलना बढ़ गया। 1991-1992 में मैंने स्वयं ज्योतिष परिकलन (calculations) और फलन (predictions) का अध्ययन किया। तब जाकर मैं समझ पाया कि 'अधजल गगरी छलकत जाए...' टाइप के ज्योतिषी जब भविष्यवाणी करते हैं, तब भविष्यवाणी खरी क्यों नहीं उतरती। मैंने ज्योतिष के बारे में यह जाना है कि कोई ऐसा प्रश्न नहीं है, जिसका कारण सहित उत्तर ज्योतिष की गणनाओं के सहारे न दिया जा सके। सिर्फ ये प्रश्न इसके अपवाद हैं:

(1) कुंडली स्त्री की है या पुरुष की?

(2) व्यक्ति जीवित है या मृत?

ज्योतिष : क्या कहता है इतिहास?

ब्रह्मा ने ब्रह्माण्ड की रचना के साथ-साथ ज्योतिष की भी रचना की। उन्होंने स्वयं इसके सिद्धांत बनाए। फिर विभिन्न सभ्यताओं- बेबिलोमियन, मिस्र, मेसोपोटामिया, ग्रीक, रोमन, आर्य आदि के विकास के साथ-साथ उन सिद्धांतों की व्याख्या होती चली गई। सबसे पहले राशि चक्र (Zodiac) को बारह काल्पनिक हिस्सों में बांटा गया। लगभग 2500 वर्ष पहले आंख से देखकर विभिन्न ग्रहों, उपग्रहों की चाल की गणना का अध्ययन शुरू हुआ। पुराने प्रसिद्ध भारतीय ज्योतिषियों में मनु, आर्यभट्ट, भृगु, बृहस्पति, कपिल, कश्यप, सारस्वत और वराहमिहिर उल्लेखनीय हैं। पाश्चात्य खगोलविदों में जाने माने नाम हैं- टालमी (ईसा से 67 वर्ष पूर्व), गैलीलियो, न्यूटन, पाइथागोरस, कैप्लर एवं कोपरनिकस। इनके बताए सिद्धान्त आज के खगोल शास्त्र के अध्ययन के महत्वपूर्ण आधार हैं।

पिछले 2500 वर्षों में ज्योतिष ने बहुत उतार-चढ़ाव देखे। कभी इसे राजाश्रय मिला तो कभी नहीं। आजकल अमेरिका, स्विट्जरलैण्ड, जर्मनी, हालैण्ड और फ्रांस के विश्वविद्यालयों में ऐच्छिक विषय के रूप में ज्योतिष पढ़ाया जाता है। भारत के कुछ विश्वविद्यालयों में ज्योतिष शास्त्र अध्ययन का मान्य विषय हो चुका है। कुछ प्राइवेट संस्थाएं भी इसका अध्यापन करती हैं। अधिकांश ज्योतिषी इस विद्या का स्वअध्ययन ही करते हैं, जिनमें से कई लोग बस, थोड़े से फार्मूले समझकर भविष्यवाणियां करना शुरू कर देते हैं। उनमें से कुछ यदि संयोगवश सही हो गयीं, तो वाह वाह। वरना कोई उल्टा-सुल्टा स्पष्टीकरण देकर वे बात टाल देते हैं।

भारतीय ज्योतिष भाचक्र (Zodiac) को 13° 20' के 27 बराबर भागों में बांटता है, जिन्हें नक्षत्र कहते हैं। ये 27 भाग क्रमशः 9 नक्षत्रों के तीन समूह हैं। पहला- अश्विनी, भरणी, कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य एवं अश्लेषा। दूसरा- मघा, पूर्वा फाल्गुनी, उत्तरा फाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाति, विशाषा, अनुराधा, ज्येष्ठा। तीसरा- मूल, पूर्वाषाढ़ा, उत्तराषाढ़ा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वा भाद्रपद, उत्तर भाद्रपद व रेवती।

पाश्चात्य विद्वानों ने राशिचक्र को 12 काल्पनिक हिस्सों में बांटा है, जिन्हें राशियां कहते हैं। प्रत्येक राशि 30° की है। मेष (Aries), वृष (Taurus), मिथुन (Gemini), कर्क (Cancer), सिंह (Leo), कन्या (Virgo), तुला (Libra), वृश्चिक (Scorpio), कुम्भ (Aquarius), मीन (Pisces)।

एक राशि में 2¼ नक्षत्र आते हैं। इस तरह मेष से कर्क के बीच में पहले समूह के नौ नक्षत्र, सिंह से वृश्चिक के बीच में दूसरे समूह के नौ नक्षत्र और धनु से मीन के बीच में तीसरे समूह के नौ नक्षत्र आते हैं।

कैसे प्रभाव डालते हैं ग्रह करोड़ों कि.मी. दूर से?

ज्योतिष से मानव जीवन के चार प्रमुख उद्देश्य समझने में सहायता मिलती है- ये हैं धर्म, अर्थ (धन), काम (सांसारिक सुख) एवं मोक्ष। ज्योतिष सिर्फ मानव का निजी जीवन ही नहीं, वरन उसके पास के वातावरण का भी अध्ययन करता है, जिसमें मनुष्य जीवन से लेकर मृत्यु तक; देशकाल और पशु-पक्षियों से लेकर पेड़-पौधों तक के बारे में जाना जा सकता है। यहां तक कि निर्जीव वस्तुओं जैसे- कार, टीवी, फ्रिज तक के विषय में भी ज्योतिष सटीक जानकारी देता है। यह ज्योतिष ही बता सकता है कि ब्रह्मांड में सब कुछ चलायमान और परिवर्तनशील है; अलबत्ता हर घटना-दुर्घटना समय की चाल से बंधी हुई है। किस देश, किस स्थान पर सूर्योदय, सूर्यास्त, ज्वार-भाटा, कब चंद्रग्रहण होगा, कब सूर्यग्रहण एवं विभिन्न ग्रहों की चाल की हजारों वर्ष पीछे और आगे की गणना अब सामान्य बात है, जो हर ज्योतिषी के कम्प्यूटर पर उपलब्ध है।

हमारे सौर मंडल में सूर्य सबसे बड़ा पिण्ड है और ऊर्जा का सबसे बड़ा स्रोत। अन्य प्रमुख ग्रह हैं बुध, शुक्र, पृथ्वी, मंगल, बृहस्पति, शनि, यूरेनस, नेप्च्यून व प्लूटो। पृथ्वी से बहुत ही पास होने के कारण पृथ्वी का उपग्रह चन्द्रमा, जो बहुत छोटा है, लगभग सूर्य के समान ही प्रभाव डालता है।

जो पिण्ड दूर है, वह कम प्रभाव डालेगा। जैसे- प्लूटो।

जो पिण्ड सर्वाधिक पास है, वह सर्वाधिक प्रभाव डालेगा। जैसे- चन्द्रमा।

जो पिण्ड बड़ा है, वह बड़ा प्रभाव डालेगा। जैसे- सूर्य, बृहस्पति, शनि।

जो पिण्ड तेज गति का है वह तुरन्त और तेज प्रभाव डालेगा। यानी उसके प्रभाव से एक के बाद एक घटनाएं तेजी से घटेंगी। जैसे- चन्द्र, बुध, शुक्र।

जो पिण्ड धीमा है, वह धीरे-धीरे प्रभाव डालेगा, पर उसका प्रभाव लम्बी अवधि तक रहेगा। जैसे- बृहस्पति, शनि, यूरेनस, नेप्च्यून, प्लूटो आदि। जहां तक ग्रहों की गति की बात है, तो सूर्य से भी काफी दूर अपने कक्ष में स्थित ये ग्रह अपनी तेज गति के बावजूद धरती से देखने पर बेहद धीमी गति से चलते दिखाई देते हैं।

हर पिण्ड एक-दूसरे को अपनी गुरुत्वाकर्षण एवं विद्युत चुम्बकीय तरंगों से प्रभावित करता है। हरेक की अपनी विशेष अंदरूनी और बाहरी संरचना होती है। फलस्वरूप हर ग्रह अलग-अलग ढंग से व्यवहार करता है। जैसे- मंगल युद्ध, क्रोध का, वीरता, तत्काल न्याय, शल्य (सर्जरी) चिकित्सा का ग्रह है, तो शनि विलम्ब, दुख, भारी कष्ट, त्याग और साधु प्रवृत्ति का ग्रह है। शुक्र भोग विलास का ग्रह है, तो बुध बुद्धि का ग्रह।

हर पिण्ड सूर्य की किरणों को अपने रंग में रंगकर धरती पर रिफ्लेक्ट करता है, जिसका अपना प्रभाव होता है। हर ग्रह अपने व्यक्तिगत प्रभाव के साथ भाचक्र के जिस नक्षत्र या राशि में भ्रमण कर रहा होता है, उस भाग की गहरे अन्तरिक्ष से आती ब्रह्मांडीय तरंगों (Cosmic rays) को भी अपने रंग में रंग कर धरती तक भेजता है। इस कारण मेष राशि के मंगल का फल अलग होता है, और वृष राशि के मंगल का प्रभाव अलग। यह ठीक वैसे ही है, जैसे सफेद प्रकाश को पहले लाल रंग के फिल्टर से गुजारा जाये और फिर फिरोज़ी रंग के फिल्टर से। दोनों दशाओं में दो रंग का प्रकाश मिलेगा, जो मूल प्रकाश से भिन्न होगा। इसी प्रकार एक ही ग्रह अलग-अलग राशि नक्षत्र में होने पर अलग-अलग प्रभाव डालता है।

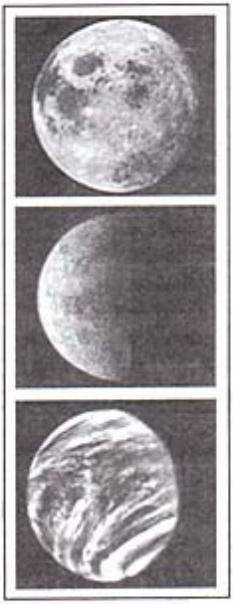

इस प्रकार किसी एक समय में अलग-अलग स्थानों पर ग्रहों का अलग-अलग प्रभाव होता है। साथ ही अलग-अलग समयों पर किसी एक स्थान पर भी ये अलग-अलग प्रभाव देते हैं। इसीलिए कोई भी दो व्यक्ति कभी एक से नहीं होते। जुड़वां लोगों के भाग्य थोड़ा-बहुत मिलते-जुलते होते हैं। इसीलिए जन्म का सही समय मालूम होना आवश्यक है, ताकि व्यक्ति विशेष के जन्म के समय की विशिष्ट ग्रह स्थिति का अध्ययन किया जा सके।

प्रश्न यह है कि लाखों-करोड़ों किमी. दूर बैठे ग्रह-उपग्रह कैसे हमारे भाग्य पर कंट्रोल करते हैं? उत्तर है कि एक औसत कद-काठी के व्यक्ति का वजन लगभग 68 किग्रा. होता है। एक आलपिन की नोंक, जिसका क्षेत्रफल और वजन लगभग शून्य है, हमारे शरीर पर कहीं भी चुभायी जाती है, तो हमें उसकी उपस्थिति का एहसास होता है। यदि हम उस आलपिन की नोंक की तुलना अपने शरीर से करें, तो पता चलेगा कि हमारा शरीर इतना भारी है कि कोई भी ग्रह इतनी दूरी से उस पर बराबर प्रभाव डाल सकता है।

क्यों गलत होती हैं भविष्यवाणियां?

ज्योतिष पर अविश्वास करने वाले जितने भी लोगों से मैंने बात की, उन्होंने स्वीकारा कि ज्योतिष के बारे में गहराई से जानने की कोशिश उन्होंने कभी नहीं की थी। अधूरी जानकारी रखने वाले किसी ज्योतिषी से चार सवाल पूछने पर यदि 3 के जवाब गलत निकल गए, तो उन्होंने ज्योतिषी की जगह ज्योतिष को ही दोष देना शुरू कर दिया।

फिर एक सच्चाई और भी है कि हर व्यक्ति को अपना भाग्य जानने की आवश्यकता भी नहीं है। बिना भविष्य जाने भी तो जीवन चलता ही है, अपनी स्वाभाविक गति से।

भविष्यवाणियां गलत क्यों और कब होती हैं? अब इस पर थोड़ा विचार करते हैं। आपने देखा होगा कि रेलवे स्टेशनों पर वजन मापने की मशीन लगी होती हैं। एक दिन नजदीक के चार-छः स्टेशनों पर जाकर आप अपना वजन कीजिए। हर मशीन अलग-अलग वजन बताएगी। एक अखबार में प्रकाशित समाचार के अनुसार मुम्बई में एक संवाददाता ने सबसे पहले चर्चगेट स्टेशन पर लगी वेट मशीन पर अपना वजन किया। बाद में मुम्बई सेन्ट्रल, दादर, बान्द्रा और फिर अन्धेरी स्टेशनों पर लगी वेट मशीनों पर उसने अपने वजन को मापा। सारी कार्यवाही लगभग एक घंटे में पूरी हो गयी। आखिरकार वह संवाददाता चौंके बिना न रह सका, जब एक ही कम्पनी की अलग-अलग पांच मशीनों ने उसका अलग-अलग वजन दर्शाया। क्रमशः कुछ इस तरह- 68.5, 68.0, 67.0, 67.5, 69.00 किग्रा.। अब एक दूसरा उदाहरण- अपने घर पर किन्हीं 3-4 पैथालॉजी वालों को बुलाएं। लगभग एक ही समय में उन सबको अपना ब्लड सेम्पल देकर रक्त में हीमोग्लोबिन की जांच कराएं। परिणाम देखकर आपको अचम्भा होगा, जब उन सबकी रिपोर्ट्स अलग-अलग होंगी। उनमें एक से डेढ़ प्रतिशत तक का अन्तर आ सकता है।

अब मैं इन घटनाओं का विश्लेषण करता हूं। पहले मामले में वजन तौलने की मशीन एक आधुनिक उपकरण है। उस पर खड़े व्यक्ति के वजन से एक चक्का घूमता है यानी कि inputs स्पष्ट है। दूसरे मामले में भी अलग-अलग लैबों में आधुनिकतम उपकरण है। फिर भी रिजल्ट अलग-अलग है! है न हैरत की बात? खैर!

मेरा उद्देश्य इस बात की ओर ध्यान दिलाना है कि भविष्य कथन के गलत होने के लिए न तो विद्वान ज्योतिषी दोषी है, न ही ज्योतिष विज्ञान। ज्योतिषी से प्रश्न पूछने वाला यदि सिर्फ अपना अनुमानित जन्म समय ही बताए, जन्म तारीख भी सही न बताए, तो ज्योतिषी की गणना सही कैसे हो सकती है? ज्यादातर लोग तो ज्योतिषी को गणना करने के लिए समय भी नहीं देना चाहते; बस तुरन्त उत्तर चाहते हैं। ऐसी हालत में जब भविष्यवाणी सही नहीं निकलती, तो दोषी कौन है?

कुछ ऐतिहासिक भविष्यवाणियां :

(1) राजा विक्रमादित्य के दरबार में अनेक ज्योतिषी थे, जिनमें सर्वोपरि थे वराहमिहिर। उचित गणनाओं के बाद की गई उनकी भविष्यवाणियां सही साबित होती थीं। राजा विक्रमादित्य को पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई, तो अनेक ज्योतिषियों ने उसकी जन्म कुंडली बनायी, और भविष्यवाणी करते समय उन सभी ने राजकुमार के 18 वें जन्मदिवस पर भारी खतरे का संकेत दिया। उन सबसे अलग वराह मिहिर ने भविष्यवाणी की कि, "अपनी 18 वीं वर्षगांठ की शाम 5 बजे राजकुमार दुर्घटना के शिकार होंगे और निश्चितरूप से उनकी मृत्यु हो जाएगी। मृत्यु का कारण होगा एक बड़ा जंगली सुअर। दुनिया की कोई शक्ति इस घटना को नहीं टाल सकती।"

वक्त गुजरा और वह घड़ी भी आ गई, जिस दिन राजकुमार की 18वीं वर्षगांठ थी। उस दिन राजा ने सुबह से ही राजकुमार के इर्द-गिर्द इतनी सुरक्षा व्यवस्था बढ़ा दी कि परिंदा भी पर न मार सके। राजकुमार को राजमहल की सातवीं मंजिल पर सैनिकों के घेरे में सुरक्षित रखा गया। राजा का सख्त निर्देश था कि हर 15 मिनट पर राजकुमार की खैर-खबर उन तक पहुंचायी जाए। शाम 5 बजे राजा को दरबार में सूचना मिली कि राजकुमार सकुशल हैं। पर दरबार में मौजूद वराह मिहिर ने कहा, "यह सूचना तो गलत है महाराज, राजकुमार अब जीवित नहीं हैं!"

वराह मिहिर की इस बात से राजा आपे से बाहर हो गए। बोले कि अगर वाराह मिहिर की यह घोषणा गलत निकली, तो उन्हें कड़ी से कड़ी सजा दी जाए। वराह मिहिर ने मुस्कराकर राजा के आदेश को स्वीकार किया। फिर राजकुमार का हालचाल जानने राजा खुद सातवीं मंजिल पर स्थित राजकुमार के कक्ष में गए। राजकुमार वहां नहीं थे।

एक सेवक ने बताया कि बंद कमरे में राजकुमार को थोड़ी घुटन सी महसूस हो रही थी, इसलिए खुली हवा में टहलने छत पर गए हैं। राजा तुरंत भाग कर छत पर गए, तो वहां राजकुमार मरे पड़े थे। जैसी कि वराह मिहिर ने भविष्यवाणी की थी, राजकुमार की मृत्यु का कारण सुअर ही था। दरअसल किला निर्माण के दौरान छत की मुंडेर पर सुअर की एक लौहप्रतिमा लगाई गई थी, जो समय के साथ जंग खा-खाकर कमजोर हो चुकी थी। राजकुमार जब छत पर आए, तो दुर्भाग्यवश वह सुअर आकृति उनकी छाती पर गिर पड़ी, और तत्काल उनके प्राण पखेरू उड़ गए।

(2) सूदसियर ने जूलियस सीजर को उनकी हत्या की चेतावनी दी थी कि 15 मार्च को उनकी हत्या हो जायेगी। अति आत्मविश्वास से भरे सीजर ने इस बात की परवाह नहीं की। दोपहर में उन्होंने कहा भी कि आधा दिन तो निकल गया; अब तक कुछ नहीं हुआ, तो आगे क्या होगा। और इतिहास साक्षी है कि सीजर के निकटतम साथी ब्रूटस ने थोड़ी देर बाद बड़ी ही बेरहमी से उनकी हत्या कर दी।

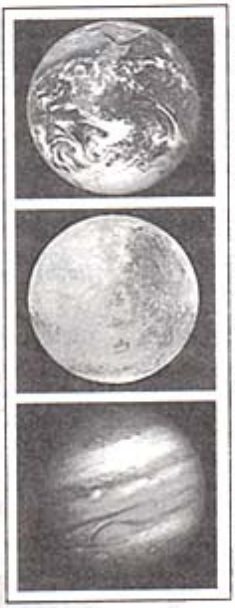

जन्म का कौन-सा समय सही माना जाए?

प्रकृति ने किसी भी समस्या को पैदा करने से पहले, उसका समाधान भी बनाया है। बस, जरूरत है, तो उस समाधान तक पहुंचने वाले रास्ते के ज्ञान की। यही ज्ञान है ज्योतिष। अगर आप अपना भविष्य जानना चाहते हैं, तो ज्योतिषी को अपना सही जन्म समय बताना होगा। पर अफसोस! कितने लोग ऐसा करते हैं? 25-50 साल पहले की बात तो छोड़िए, जन्म का समय आज भी ठीक से नोट नहीं किया जाता। अस्पताल की घड़ी और आपकी घड़ी में दर्शाए गए समय से लेकर, अलग-अलग रेडियो स्टेशनों, हवाई अड्डों और रेलवे स्टेशन की घड़ियों में चार-पांच मिनट तक का अन्तर मिल जाता है। माना कि 2-3 मिनट इधर-उधर होने से जन्म कुंडली में विशेष अन्तर नहीं पड़ता, परंतु यहां मेरा मकसद है जन्म समय की उपयोगिता को स्पष्ट करना।

जैसा कि विद्वानों में होता ही है, ज्योतिष के विद्वानों में भी जन्म की परिभाषा को लेकर मतभेद हैं। यहां पेश हैं 3 प्रमुख मत...

(1) मां के गर्भाशय में जब अण्डा (Ovum) शुक्राणु (Sperm) से निषेचित होता है, तभी नये जीव की उत्पत्ति होती है। पर चूंकि यह घटना देखी नहीं जा सकती, इसलिए समय का अनुमान लगाना निर्णायक तो नहीं ही कहा जाएगा।

(2) जब सन्तान के प्रथम अंग के दर्शन हों। यानी जब वह गर्भाशय से बाहर आना शुरू करे।

(3) जब सन्तान माता के शरीर से पूरी तौर पर अलग हो। इसमें दो मत हैं :
(अ) जब सम्पूर्ण देह बाहर आ जाए।
(ब) जब नाल काटी जाए।

उपरोक्त 3(ब) प्रायोगिक तौर पर सर्वाधिक सटीक फल देता है। आजकल अक्सर बच्चे सिजेरियन होते हैं, जो प्राकृतिक जन्म से परे होते हैं। ऐसी दशा में नाल काटने के समय को ही जन्म का समय मानना सर्वाधिक उचित है।

नवजात शिशु को मां से जोड़ने वाली नाल को जब अलग किया जाता है, तो ऐन उसी क्षण एक नए जीवन की उत्पत्ति होती है। सूर्य, चन्द्र आदि नवग्रह उस कोमलतम काया पर एक निमिष (एक पल का भी चौथाई हिस्सा) में ऐसा प्रभाव डालते हैं, जो उसकी पूरी जिंदगी का लेखा-जोखा तय करता है। कहने का मतलब, सबसे महत्वपूर्ण और सबसे सही जन्म समय है 'नाल कटने का समय'। अक्सर पाठकों ने सुबह 7 बजे, दोपहर 1 बजे, शाम 9 बजे आदि समयों में अपने रेडियो पर बी.बी.सी. लंदन या किसी न किसी आकाशवाणी केन्द्र से 'पुक-पुक' की एक खास आवाज सुनी होगी। ये जो 5 बीप हैं, उनमें से अन्तिम बीप ही उस वक्त का सही समय है।

बहरहाल, जन्म का सही समय क्या होता है, यह तो आपको पता चल ही गया है, लेकिन वे लोग क्या करें, जिनका जन्म समय उक्त तरीके से नोट नहीं किया गया? ऐसे लोग अपने जन्म का अनुमानित समय ही ज्योतिषी को बताएं। साथ में अपनी गुजरी हुई जिंदगी की 8-10 प्रमुख घटनाओं की तारीखवार जानकारी दें। वे घटनाएं कुछ इस प्रकार की हो सकती हैं- परीक्षा में सफलता/असफलता, नौकरी लगना, स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याएं, रोमांस, शादी होना / न होना, संतान प्राप्ति, विदेश यात्रा आदि। इन घटनाओं के समय से विपरीत गणना करके जन्म का समय सेकंड तक सही निकाला जा सकता है, भले ही जन्म के 70 वर्ष बीत चुके हों। एक बार जन्म का सही समय मिल जाने पर भविष्यवाणियां अचूक होने लगती हैं और चमत्कारी प्रभाव देती हैं। बशर्ते ज्योतिषी ने ध्यानपूर्वक अध्ययन किया हो।

तो ज्योतिष और सटीक भविष्यवाणी के बारे में अब आपके मन में यही सवाल उठे रहे होंगे --

- मेरी जन्म कुण्डली जिन गणनाओं के आधार पर बनी, क्या वे शतप्रतिशत सही थीं?
- मैं सही ज्योतिषी का चुनाव कैसे करूं?
- जन्म समय एक समान होने पर भी विभिन्न ज्योतिषियों द्वारा की गई भविष्यवाणियों में अंतर क्यों होता है?
- अगर भाग्य अटल है, तो उसे सुधारने की कोशिशें ही क्यों की जाएं?
- स्वास्थ्य के नजरिए से कौन सा ग्रह किस अंग को प्रभावित करता है और यह प्रभाव कब तक और कितना रहता है?
- अपनी बीमारी के लिए मैं किस इलाज पद्धति (एलोपैथी, आयुर्वेद, होमियोपैथी, प्राकृतिक चिकित्सा आदि) को आजमाऊं?
- सटीक भविष्यवाणी क्या पैथोलॉजी रिपोर्ट को भी झुठला सकती है?

(उत्तर अगले अंक में)

- डॉ. पीयूष सक्सेना
पीएच.डी. (नैचरोपैथी)

(लेखक ने भारतीय और विदेशी प्राकृतिक चिकित्सा विधियों पर काफी अध्ययन और प्रयोग किये हैं।)